अँखियाँ हरि दर्शन की प्यासी

देख्यो चाहत कमल नैन को, निस दिन रहत उदासी
अँखियाँ हरि दर्शन की प्यासी

केसर तिलक मोतियन की माला, वृंदावन को वासी
नेह लगाय त्यागि गये तृन सम, डारि गये गल फाँसी ॥२॥
अँखियाँ हरि दर्शन की प्यासी

काहू के मन की कोउ न जाने, लोगन के मन हासी
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन, लेहों करवत कासी
अँखियाँ हरि दर्शन की प्यासी

- सूरदास